बुलेटिन

जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पीटल

जी.बी.एच. मेमोरियल कैंसर हॉस्पीटल

जी.बी.एच. आरोग्यम्

राजधानी के बाहर राजस्थान का एकमात्र NABH प्रमाणित हॉस्पीटल

वर्ष – 3 । अंक 13–14

सितम्बर–अक्टोबर 2014

आईये मिल कर कैंसर को हराये।

संरक्षक
डॉ. कीर्ति के. जैन
सी.एम.डी.

प्रधान सम्पादक
डॉ. देव कोठारी
एम.डी.

संम्पादक मण्डल
डॉ. वी. डी.पारीख
सी.ई.ओ.,मेडिकल डायरेक्टर

डॉ.आनन्द झा
सी.ई.ओ.

सह–सम्पादक
पुष्पेन्द्र डी. गामोट
पी.आर.ओ.

प्रकाशक
जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पीटल
101,कोठी बाग,
भट्ट जी की बाड़ी,
उदयपुर 313001 राज.
सम्पर्क +91 0294-3056000,
2426000
फेक्सः 0294-2526982

मुद्रकः
स्टार एड मीडिया प्रा.लि.
उदयपुर

शुभारम्भ कैंसर चिकित्सा का

जी.बी.एच. मेमोरियल कैंसर हॉस्पीटल

सम्पुर्ण कैंसर निवारण के लिए बेहतरित चिकित्सा का वादा

कैंसर रोगियों को जिंदगी की जंग जितने के लिए सर्वोत्तम चिकित्सा के मकसद से जी.बी. एच कैंसर हॉस्पीटल की स्थापना की गई है। सम्पुर्ण कैंसर निवारण के लिए सर्जरी, किमो थेरेपी, रेडियेशन थेरेपी की सुविधा उपलब्ध है। कैंसर रोग निदान के सटीक इलाज के लिए लिनियर एक्सीलरेटर मशीन स्थापित की गई हैं। जो उच्च इलेक्ट्रान से न्युनतम फोटोन उर्जा स्रोत प्रवाहित कर किसी भी प्रकार के कैंसर को जड़ से मिटाने में सहायक है। जीबीएच चिकित्सालय में जाने–माने विशेषज्ञ चिकित्सक हैं। यहां के चिकित्सक वर्तमान चिकित्सा के साथ विश्व की अत्याधुनिक चिकित्सा प्रणालियों से जुड़े हुए है। जो समग्र चिकित्सा सेवाओं के उद्देश्य को पुरा करता हैं। चिकित्सकों का मानना है कि सेहत और चिकित्सा की दुनिया में नये युग का आगाज हो गया हैं। जो निश्चित ही यहां आने वाले रोगियों के लिए स्वस्थ जीवन प्रदान करेगा।

चेयरमैन

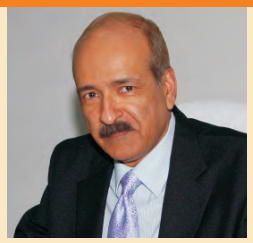

डॉ. कीर्ति के. जैन
अंतराष्ट्रीय कैंसर रोग विशेषज्ञ
जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पीटल
जी.बी.एच. मेमोरियल कैंसर हॉस्पीटल

विश्व केंद्रीत चिकित्सालय होने की वजह से, जीबीएच हॉस्पीटल में सभी विभागों के विश्वस्तरिय डॉक्टरों के सेमिनार का आयोजन करवाता हैं। कन्टीन्यूड मेडिकल एजूकेशन (सीएमई) के माध्यम से नवीनतम चिकित्सा पद्धति के बारे सजग है। साथ ही निम्न तबके के लोगों के लिए उच्चस्तरिय चिकित्सा सुविधाएं उपलबध करवाने के लिए समाज के साथ जुडकर हर सम्भव सुविधा मुहैया करवाने की कोशिश की जाती हैं।

जी.बी.एच. मेमोरियल कैंसर हॉस्पीटल परिचय

जी.बी.एच. मेमोरियल कैंसर हॉस्पीटल जाने माने कैंसर विशेषज्ञ डा. किर्ती के जैन के निर्देशन में संचालित हैं। जो की स्वयं कैंसर व रक्त विशेषज्ञ हैं। आपका **36** वर्षो का कैंसर रोग निदान का अनुभव हैं। जो निश्चित ही कैंसर रोगियों के लिए वरदान साबित होगा। इस हॉस्पीटल में कैंसर निवारण के लिए विश्वस्तरिय सुविधाए उपलब्ध कराने के प्रयास पिछले **2** वर्षो से चल रहे हैं। रेडियेशन थेरेपी किमोथेरेपी एवं सर्जरी के लिए विशेषज्ञ डॉक्टर की नियमित सेवाएं उपलब्ध हैं। दक्षिणी राजस्थान का एक मात्र विश्वस्तरीय कैंसर चिकित्सा केन्द्र हैं।

उदयपुर शहर के नजदीक एयरपोर्ट रोड पर ट्रांसपोर्ट नगर, बेडवास में सुरम्य वातावरण में अरावली की पहाडियों के बीच शांतिपुर्ण माहौल में स्थापित किया गया हैं। यह **300** शय्याओं का अत्याधुनिक हॉस्पीटल है। जो कैंसर रोगियों को समर्पीत है।

जीबीएच मेमोरियल कैंसर हॉस्पीटल का नाम उन यादो के साथ जुडा हुआ हैं जो हमेशा से ही डॉ. किर्ती के. जैन के लिए प्रेरणा स्रोत रहे है। इस हॉस्पीटल को वैश्विक मानदंडों के मुताबिक तैयार करने की इच्छा जूड़ी हुई है। दुसरे शब्दों में कहें तो मातृ भूमि के प्रति जुड़ाव हैं। यह देखते हुए कि आदिवासी बाहुल्य मेवाड़ एवं आस पास के रोगियों को एक समय चिकित्सा के लिए गुजरात, मुम्बई, जाने को मजबुर थे।

कैंसर रोगियों के लिए क्या विशेष हैं। चुकिं यह पुर्ण रूप से कैंसर निदान केन्द्र है जिसमें विश्वविख्यात डॉक्टर की टीम है। कैंसर सर्जन, किमोथेरेपी, रेडियेशन थेरेपी की सुविधा उपलब्ध हैं। जी. बी.एच. अमेरिकन टीम अन्तराष्ट्रीय स्तर पर रोगों के समाधान के लिए दुनिया के साथ–साथ हमारे डॉक्टर्स भी विश्व स्तर पर रोगों से सम्बन्धित समस्याओं से सम्पर्क में हैं।

- अन्तर्राष्ट्रीय कैंसर विशेषज्ञ डॉ किर्ती के. जैन नैतृत्व में संचालित।
- दक्षिणी राजस्थान का एकमात्र सम्पूर्ण कैसर निवारण हॉस्पीटल।
- लिनियर एक्सीलरेटर मशीन द्वारा रेडीयोथेरेपी सुविधा।
- कैंसर के उपचार हेतु अमेरिका के विभिन्न कैंसर रोग विशेषज्ञों द्वारा गठित (ट्यूमर बोर्ड) द्वारा उपचार की व्यवस्था एवं कैंसर उपचार हेतु रोगी एवं परिजनों को विडियो कॉन्फ्रेन्सिंग सुविधा।
- सबसे कम दरों में इलाज।

जी.बी.एच. – कैंसर टीम

हॉस्पीटल में योग्य, विशेषज्ञ एवं कई वर्षो से कैंसर चिकित्सा के अनुभवी डॉ. गरिमा मेहता (ब्रेस्ट कैंसर विशेषज्ञ), डॉ. राजेश पसरिचा (रेडियेशन ऑकोलाजी) पुर्व में भगवान महावीर कैंसर हॉस्पीटल–जयपुर, डॉ. कुरेश बम्बोरा (कैंसर सर्जन) पुर्व में – टाटा मेमोरियल कैंसर हॉस्पीटल–मुम्बई, डॉ. कनिष्क मेहता–नाक, कान, मुँह व गला कैंसर विशेषज्ञ, जी.सी.आर.आई, अहमदाबाद–गुजरात के विशेषज्ञ कैंसर रोग निदान के लिए नियमित सेवाए दे रहे हैं।

कैंसर क्या हैं?

आधुनिक समय में कैंसर रोग बड़ी समस्या के रूप में हमारे सामने हैं। कैंसर एक घातक बिमारी हैं। असामान्य कोशिकाओं की अनियन्त्रित वृद्धि को कैंसर कहते है। सामान्य तया शरीर में गांठ होना, असामान्य रक्त स्त्राव, लम्बे समय तक खांसी, अस्पष्टीकृत वजन घटना, मल त्याग में परिर्वतन, स्त्रीयों में स्तनों में निरन्तर दर्द आदि कैंसर के मुख्य लक्षण हैं। पुरूषों में मुँह का कैंसर, फेफडों का कैंसर, प्रोस्टेट कैंसर एवं महिलाओं में बच्चे दानी का कैंसर एवं ब्रेस्ट (स्तन) कैंसर सर्वाधिक पाए जाते है।

कैंसर का शक कब करें।

दीर्घकालीन पाचन सम्बन्धी समस्याओं, कब्ज, अपच, पाइल्स, घाव आदि का लम्बे समय तक बने रहना और अचानक शौच की आदत में बदलाव, स्वर में परिवर्तन कफ के साथ रक्त। महिलाओं के मासिकधर्म का अनियमित व रजोनिवृति के पश्चात् रक्तस्राव व स्तन में गाँठ होना।

कैंसर अब ठीक हो सकता है

आज सबसे उन्नत और प्रभावी कैंसर इलाज उपलब्ध है। वैकल्पिक कैंसर उपचार पूरी दुनिया में जल्दी से बढ रहा हैं। आज पूरी दुनिया में आंदोलन की तरह कैंसर उपचार हो रहा हैं। विश्व में कई संस्थान/ हॉस्पीटल कैंसर के प्रभावी इलाज के लिए जाने जाते है। कैंसर रोग कोई महीने दो महीने की प्रक्रिया नहीं है, यह वर्षो की प्रक्रिया के बाद अपना प्राथमिक रूप तैयार करता है। मनुष्य में कैंसर क्यों होता है? यह निश्चित रूप से कहना कठिन है, फिर भी इसके कई कारण हो सकते हैं जिनमें वातावरणीय बदलाव, प्रदुषण, अप्राकृतिक रहन–सहन व जीवनशैली, रसायनों का अधिक प्रयोग, गुण–सूत्रीय परिवर्तन, किसी बीमारी, गॉठ या मस्से का लम्बे समय तक रहना विकिरणों का प्रभाव, या और भी कारण हो सकते है।

नवीनतम तकनीक रेडियेशन थेरेपी

लिनियर एक्सीलरेटर मशीन से सटीक एवं नवीनतम आई.जी.आर.टी –इमेज गाईडेड रेडियेशन थैरेपी–**IGRT**) पद्धति द्वारा कैंसर उपचार की सुविधा है। इस तकनिक में स्वस्थ कोशिकाओं को बचाते हुए केवल कैंसर कोशिकाओ को ही नष्ट किया जाता हैं। अतः कैंसर के मरीज को न्युनतम साईड इफेक्ट होते है। इसके अलावा इस मशीन में आई.एम.आर.टी इनटेन्सिटी मोड्युलेटेड रेडियेशन थैरेपी (**IMRT**), तथा **3**–डी सी. आर.टी (**3D-CRT**) एवं सामान्य (**Conventional**) पद्धतियों द्वारा इलाज भी सम्भव है। यह **LINAC** मशीन उच्च उर्जा स्रोत के इलेक्ट्रोन के **4 /6/8/10/12/15/18 Mve** उर्जा एवं निम्न उर्जा स्रोत फोटोन के उर्जा विकिरण स्त्रावित करने में सक्षम हैं जिससे स्कीन कैंसर जो की शरीर के एकदम सतह पर होता हैं से लेकर शरीर के अंदर किसी भी गहराई में कैंसर ट्यूमर को पूर्ण रूप से खत्म करने में सक्षम हैं।

कैंसर के कारण

कैंसर रोग के मुख्य कारण तम्बाकु का सेवन, शराब पीना, विकिरण, हेपेटाइटिस बी, हेपेटाइटिस सी से संक्रमण, माता–पिता से आनुवंशिक दोष तथा केमिकल प्लान्ट, खान आदि में काम करना है। कैंसर रोग तम्बाकू से **22** प्रतिशत, **10** प्रतिशत कैंसर के मामले कुपोषित आहार से, शारिरिक श्रम के अभाव से, शराब पीने से, विकिरणों के संक्रमण से एवं **20** प्रतिशत कैंसर हेपेटाइटिस बी, हेपेटाइटिस सी व मानवीय संक्रमण से होते है। **5-10** प्रतिशत कैंसर माता–पिता से आनुवशिक दोष के कारण होते है।

कैंसर रोग का उपचार

जी.बी.एच. मेमोरियल कैंसर हॉस्पीटल दक्षिण राजस्थान का सर्वप्रथम सम्पुर्ण कैंसर हॉस्पीटल हैं। कैंसर का इलाज तीन प्रक्रियाओं द्वारा किया जाता है।

- ट्यूमर और इसके पास के ऊतक को हटाने के लिए शल्यचिकित्सा (सर्जरी)
- ट्यूमर और कैंसर की कोशिकाओं को नष्ट करने के लिए नियंत्रित मात्राओ में विकिरण (रेडिएशन)
- कैंसर की कोशिकाओं की वृद्धि को धीमा करने या नष्ट करने के लिए रसायनचिकित्सा (कीमोथेरेपी) दवा।

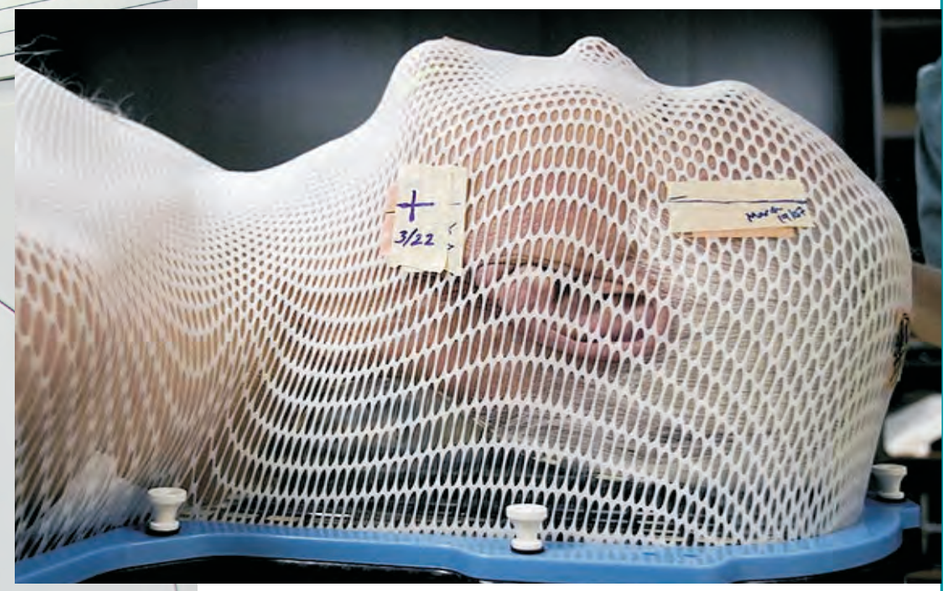

जी.बी.एच. मेमोरियल कैंसर हॉस्पीटल की भविष्य की योजनाएं है।

कैंसर एक घातक बिमारी हैं जो मृत्यु तक साथ नही छोडती यह अमीरी या गरीबी देखकर नही आती यह पुरे परिवार में दहशत लेकर आती हैं। जीबीएच मेमोरियल कैंसर हॉस्पीटल न्युनतम दरों पर अत्याधुनिक चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए कटिबद्ध हैं। साथ ही कम आय वर्ग के लोगों को भी सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए राज्य सरकार एवं चिकित्सा विभाग से सहयोग की दरख्वास्त की गई है। भविष्य में राज्य सरकार के साथ जुडकर पी.पी.पी. मॉडल के साथ जुड़कर कम से कम खर्च में इलाज हो पायेगा। साथ ही रोगियों को अत्याधुनिक सुविधाएं प्रदान करने के प्रयास जारी हैं। निम्न एवं निचले तबके के बी.पी.एल. परिवारों की सहायता के लिए सरकार को अनुमोदन प्रस्ताव भेजा जा चुका हैं।

अलग से कैंसर हॉस्पीटल स्थापित करने का कारण यही रहा है कि कैंसर रोग का सम्पुर्ण इलाज एक ही छत के निचे विशेषज्ञ टीम के निर्देशन में हो। जिससे कैंसर का सही उपचार (मैनेजमेट) किया जा सके। वर्तमान में यह हॉस्पीटल सम्पूर्ण राजस्थान में सबसे कम दरों पर आधुनिक कैंसर चिकित्सा उपलब्ध करावा रहा हैं।

रेडियेशन थेरेपी द्वारा कैंसर का इलाज

रेडियेशन प्रक्रिया में सर्व प्रथम मरिज के शरीर में कैंसर का सटिक एवं सही आकार व स्थान का निर्धारित किया जाता हैं। इसके आधार पर कैंसर विशेषज्ञ रेडियेशन प्लानिंग करते हैं। शरीर के अन्य अंगों को नुकसान पहुचाऍं बिना इलाज किया जाना रेडियेशन थेरेपी का मुख्य उद्देश्य है। ट्युमर टीम द्वारा (कैंसर सर्जन, किमो थेरैपीस्ट, रेडियेशन थेरैपीस्ट) निर्धारित पद्धति के अनुसार उपचार किया जाता हैं। रेडियेशन थेरेपी दर्द रहित प्रक्रिया हैं।

कैंसर से सम्बन्धित जॉचे।

डायग्नोसिस, सी.टी., स्केन, बायोप्सी एवं दिमाग के लिए एम.आर.आई, स्तन कैंसर के लिए मेमोग्राफी, गर्भाशय के कैंसर हेतु पेप स्मीयर इत्यादि परीक्षण होते है। इसके बाद पता लग पाता है की कैंसर कहां किस अवस्था में हैं एवं कितना प्रभावी है।

आपकी जरूरत क्या है?

कैंसर रोग में यह समझना आवश्यक हैं कि रोगी को किस प्रक्रिया से ट्रीटमेंन्ट दिया जाय एवं किस प्रक्रिया को अपनाये बिना कैंसर सेल को नष्ट किया जायें। क्योंकि हर प्रक्रिया से रोगी को शरीरिक नुकसान होता है। सटिक और भविश्य के प्रभावों को कम करने के लिए ट्युमर टिम द्वारा (अध्ययन) सलाह मशवरा होना आवश्यक हैं। ट्रीटमेन्ट की प्रक्रिया को आगें बढाया जाना चाहिए। डॉ. किर्ती के जैन (कैंसर एवं रक्त विज्ञान विशेषज्ञ)

भारत में वर्तमान में कैंसर स्थिति

एक नजर

भारत में कैंसर रोगियों कि स्थिति भयावह है। प्रत्येक वर्ष तंबाकू के कारण लगभग **1-5** लाख कैंसर, **4-2** मिलियन हार्ट डिजीज, **3-7** मिलियन फेफड़ों से संबंधित बिमारियाँ हो जाती हैं। हमारा देश विश्व में ऑरल कैंसर की का गढ बन चुका हैं स्वास्थ्य मंत्रालय के आँकड़ों से पता चलता हैं कि भारत में होने वाले कुल कैंसर रोगियों में से 65 प्रतिशत केस में मुख्य कारण तंबाकू का सेवन ही होता हैं। इसकी सबसे बड़ी समस्या यह है कि इसका निदान बहुत ही देर से हो पता हैं। जानकारी के अभाव में रोगियों को उचित समय पर इलाज नही मिल पाता है। साथ ही अस्पतालो में मरिजों की अधिकता एवं खर्चिला है। उपचार में देरी के कारण अक्सर उन्हें अपनी जान से हाथ धोना पड़ जाता हैं। यदि समय रहते बीमारी के प्रारंभिक स्तर पर इसका निदान हो जाए तो उपचार की उपलब्धता व उसको अपनाकर जीवन बचा पाने के आसार बढ़ जाते हैं।

स्ट्रोक के मरीजों के लिए समय की महत्ता

उदयपुर। **48** वर्धमान कॉम्पेक्स, हिरण मगरी से. **4** निवासी मेजर पी.एस. राणावत उम्र **65** वर्ष। दिनांक **25/11/2013** को अपने घर पर अपनी पत्नी के साथ बैठकर सवेरे **7-7:30** बजे चाय पी रहे थे। अचानक ही उनके बायी हाथ की शक्ति में कमी महसुस होने लगी और साथ ही बोलने से लडखडाने लगे। उनकी पत्नी ने यह सब देख अपने बेटे और बेटी को लेकर मेजर साहब को आवरी माता जी के लिए रवाना हो गये। माताजी पहुचते–पहुचते उनके बाये पैर की शक्ति में भी कमी महसुस होने लगी। माताजी के दर्शन कर उनकी बेटी और बेटे ने तुरन्त उन्हे उदयपुर पहुच कर जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पीटल लाने का निर्णय लिया। दोपहर लगभग **1** बजे पहुचें जहां पर इन्टरवेंशनल न्यूरोलॉजिस्ट एवं स्ट्रोक स्पेशिलिस्ट डॉ. अतुलाभ वायपेयी के निर्णय से मेजर पी.सी. राणावत की सी.टी. स्केन कराने पर मस्तिष्क की दाहिनी ओर रक्त का थक्का पाया गया। डॉ. अतुलाभ वायपेयी ने सोलिटीयर डिवाइस के माध्यम से मेकेनिकल थ्रोम्बेक्टोमी प्रोसेस द्वारा रक्त के थक्के को निकालने में सफल हुए। जिस कारण आज की तारीख में मेजर साहब स्ट्रोक (ब्रेन अटैक) के अन्य मरीजो की तुलना में अपने शारीरिक अंगों की शक्ति में **80** प्रतिशत तक आराम महसुस कर रहे है।

स्ट्रोक के उपचार में मरिज के प्रारम्भिक **6** से **8** घंटे बीमारी को रिकवर होने में काफी महत्वपुर्ण भुमिका रहती है और यही कारण है कि स्ट्रोक के मरीजों का समय पर उपचार कराया जाना जरूरी हैं। समय के गुजरने के साथ–साथ मस्तिष्क की कोशिकाएं ज्यादा नष्ट होती है। जिससे बचने की सम्भावना कम रहती है।

तीन वर्षीय बालिका के पेट से निकला नेलकटर अनजान थे परिजन

उदयपुर। दिनांक **10** जुलाई, उदयपुर, तीन वर्षीय बालिका को उसके परिवार वाले जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पीटल के इमरजेन्सी में लेकर आये और परिवार वालो ने डॉक्टर को यह बताया कि बालिका पिछले दो–तीन दिनों से खाना नहीं खा रही है। बालिका के परिजन समस्या से अनजान थे। डॉ.पंकज गुप्ता, (गेस्ट्रोएंट्रोलॉजिस्ट) द्वारा लडकी की जांच करने पर उसकी छोटी आंत में एक नेलकटर पाया गया। शायद लडकी ने यह नेलकटर अनजाने में निगल लिया था। यह बात भी सामने आयी कि लडकी की माँ का निधन एक महिने पहले हो गया।

प्रक्रिया-

सर्वप्रथम बालिका को बिना बेहोश किये दूरबीन द्वारा जॉच की गयी, जिसमें नेलकटर छोटी आंत के घुमाव **(Durdenal Sweep)** पर अटका हुआ पाया गया। दूसरे चरण में नेलकटर को एण्डोसकोपिक लूप द्वारा छोटी आंत से पकड़ कर भोजन की थैली में छोडा गया। तीसरे चरण में **(Rat tooth foreceps)** द्वारा नेलकटर को पकड़कर सावधानी पूर्वक भोजन नली को सुरक्षित रखते डॉ. पंकज गुप्ता ने एंडोस्कॉपी द्वारा **10** मिनट की प्रक्रिया में बालिका को बिना बेहोश किये ही छोटी आंत से नेलकटर बाहर निकाल दिया। नेलकटर नही निकाले जाने की स्थिति में आंत में रूकावट व आंत फटने की पूरी सम्भावना थी। और ऐसे में मरीज की जान जाने का जोखिम भी होता है। इस तरह डॉ गुप्ता ने न्यूनतम खर्च में ही बिना कोई सर्जरी के और बिना किसी जोखिम के नेलकटर निकाल कर बालिका को तुरंत राहत प्रदान की।

अतिसंवेदनशील आंत्र व्याधि

IBS (IRRITABLE BOWEL SYNDROME)

डॉ. पंकज गुप्ता, कंसलटेन्ट गेस्ट्रोएण्ट्रोलोजीस्ट
जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पीटल–उदयपुर

भारतीय दिनचर्या सवेरे शौच निवृति से आरंभ होती है। वैदिक काल से ही हमारी संस्कृति में शामिल होने से यह हम सभी की विचारधारा में इस तरह स्थापित हैं कि पूर्ण दिवस की दैनिकी सुचारू तभी चलती है जब सवेरे की शुरूआत नियमित रहे।

भारत वर्ष में **15** प्रतिशत व्यक्ति आई.बी.एस. यानि अतिसंवेदनशील आंत्र व्याधि से ग्रसित हैं। जैसा कि नाम से प्रकट हैं इस रोग में व्यक्ति की बडी आंत्र जिसका कार्य मल का संग्रह कर सवेरे शौच के समय इसे प्रवाहित कर देना है, उस बडी आंत की संवेदनशीलता बढ़ जाती है। सामान्य व्यक्ति के मस्तिष्क में शौच निवृति का संदेश तभी जाता हैं जब बड़ी आंत के अंतिम हिस्से में **300** से **400** ग्राम मल पहुँचता हैं **IBS** से ग्रसित व्यक्ति की बडी आंत **50** ग्राम या उससे भी कम मात्रा में मल के लिए संवेदनशील हो जाती हैं।

IBS के लक्षण किसी व्यक्ति में पहली बार **20** से **30** वर्ष की उम्र में प्रकट होते हैं। इसका दूसरा पहलू यह भी है कि व्यक्तित्व निर्माण एवं अन्य जिम्मेदारियां जैसे कि पारिवारिक, सामाजिक एवं भविष्य निर्माण का सामना भी इसी अवस्था में करना पड़ता हैं। जिनका मस्तिष्क इन सभी जिम्मेदारियों को संयमित रूप से निर्वहन नहीं कर पाता हैं मुख्य रूप से इस बीमारी का निशाना बनते हैं। जिनके परिवार का अन्य सदस्य भी इस रोग से ग्रसित होता हैं वे भी बचपन से जाने अनजाने में दृष्टिपटल पर इस बीमारी को पारिवारिक विरासत मान बैठते है। कुछ व्यक्तियों में सामान्य पेचिश के बाद भी बड़ी बांत की गति सामान्य नहीं हो पाती और वे **Post Diarrheal IBS** से ग्रसित हो जाते है। दाम्पत्य जीवन या यौन संबंधि कुंठा जिसमें कि बचपन में घटित यौन ज्यादति भी शामिल है, सामान्य न हो इसका अप्रत्यक्ष रूप से बड़ी आंत पर प्रभाव पड़ सकता है। पेशवर जीवन में क्षमता से ज्यादा कार्य या फिर साथियों द्वारा अनुचित व्यवहार भी इसका कारण बन सकता है।

IBS का निदान एवं उपचार मुख्य रूप से इसके कारण को समझना एवं उसका निवारण करने से संबंधित हैं। जैसा कि इसका मुख्य कारण तनाव प्रबंधन में विफलता एवं मस्तिष्क द्वारा बड़ी आंत के संदेशों को प्राथमिकता से लेने से संबंधित हैं। स्वाभाविक रूप से आईबीएस का जड़ से निवारण भी तभी संभव है जबकि ग्रसित व्यक्ति तनाव प्रंबधन (स्ट्रेस मेनेजमेन्ट) सीख ले।

उपचार के प्रथम चरण में यही निर्देश दिया जाता हैं कि अपनी दिनचर्या को तनाव मुक्त रखने के लिए रोजाना आधा घण्टा पर्याप्त निन्द्रा ले, कार्यालय एवं घर का जीवन अलग–अलग रखे। रोजाना व्यायाम एवं प्राणायाम करें।

प्रथम चरण सफल नहीं होने पर दूसरे चरण में चिकित्सक लाक्षणिक उपचार करता हैं, विकल्प के रूप में बड़ी आंत के बैक्टिरिया को नियमित करना, मानसिक तनाव को नियंत्रित करना एवं रोगी को उसके रोग के बारे में विस्तार से समझाना।

आई.बी.एस. के लक्षणों को गंभीरता से लेना चाहिये यदि, प्रथम बार लक्षण **50** वर्ष की अवस्था के बाद प्रकट होते है, व्यक्ति को आईबीएस के लक्षणों के साथ बुखार, वजन में कमी, मल में रक्त या फिर रात्रि को निद्रा से उठकर शौच जाना पड़ता हों। इन सभी के होने पर चिकित्सक अन्य कारण की जांच हेतु बड़ी आंत की दूरबीन द्वारा जांच करता है। जो कि एक सामान्य बाहय् रोगी जांच है।

जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पीटल में 53 युनिट रक्त दान।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक का एक लाख युनिट का लक्ष्य।

उदयपुर। मानव हैं मानवता में प्राण भरें संकल्पित हो सभी, आओ रक्तदान करें इसी संकल्प के साथ जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पीटल में तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इसमें समाज सेवक संस्थाओं के प्रतिनिधियों, नियमित रक्तदाताओ, व आम जनमानुष ने रक्त दान किया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा आयोजित विशाल महा रक्तदान शिविर पुरे भारत में एक ही दिन में एक लाख युनिट रक्तदान करने का विशाल लक्ष्य के साथ पुरा हुआ।

युवतियों में स्त्री रोग एवं कॉस्मेटीक सर्जरी

सम्बंधी जागरूकता कार्यशाला का आयोजन

उदयपुर। 24 जुलाई जी.बी.एच अमेरिकन हॉस्पिटल द्वारा आयोजित कार्यशाला के अन्तर्गत डॉ. आकांक्षा त्रिपाठी (स्त्री रोग विशेषज्ञ) ने स्त्रीयों में होने वाली समस्याओं जैसे रक्ताल्पताएँ, अनियमित माहवारी, पी. सी.ओ.एस. व अन्य रोगों से अवगत कराया एवं गर्भाशय ग्रिवा कैंसर सें होने वाले रोगों से बचने के लिए मार्गदर्शन दिया। बच्चेदानी के कैंसर के लिए वेक्सिन संबंधित जानकारी दी। इस अवसर पर डॉ. जी. नागराज ने (बर्न, प्लास्टिक एवं कॉस्मेटिक सर्जन) कार्यशाला में स्मार्ट वेसर लाईपोसेक्सन, शरीर की चर्बी घटाना, होठ को सुन्दर बनाना नाक को सुंदर बनाने सम्बन्धित जानकारी दी। कॉस्मेटीक समस्याओं से निजात पाने के लिए अति आधुनिक तकनीक की जानकारी दी एवं अपने अनुभव को विस्तृत रूप से बताया।

मोटापा क्लिनिक (स्मार्ट वेजर लाइपोसक्सन)

लाइपोसक्सन एक ऐसा प्रक्रिया है जिसमें शरीर के किसी भी भाग में जमा चर्बी को बिना सर्जरी के अल्ट्रा साउण्ड तरंगो से चर्बी को गलाया जाता है। उसे तरल रूप में निकाल लिया जाता हैं। इस प्रक्रिया में ब्लास्ट सेल (चर्बी निर्माण में सहायक कोशिकाएं) को निकाल लिया जाता हैं। जहां से हमने लाइपोसक्सन किया हैं, उस स्थान पर वापस चर्बी जमा होने कि सम्भावना नगण्य हो जाती हैं।

यह मात्र एक घण्टे की प्रक्रिया है। कोई भी व्यक्ति जिसे लाइपोसक्सन किया गया है उसी दिन से अपने रूटिन प्रासेस में कार्यकलाप कर सकता है। इस प्रक्रिया में एक बार में एक जगह से पाच से छः लिटर फेट लिक्वीफाई करके चर्बी को तरल रूप में निकाला जा सकता हैं। सामान्यतः इसकी सीमा **10** से **15** लिटर तक हो सकती है। भ्रम में नही रहें। इस प्रक्रिया में ताप बढाने (हीट वेव) वाली विकिरणो का इस्तेमाल नही किया जाता हैं। इसमें स्कीन के जलने या खराब होने की सम्भावना नगण्य रहती हैं। साथ ही पुर्णतया सुरक्षित और सरल प्रक्रिया हैं।

इसमें मोटापे से परेशान, विशेषतया पुरूषो के बडे हुए स्तन (गायनेकोमेस्टीया), स्त्रीयों के स्तनो का आकार बढाना व घटाना, शरीर का आकार सन्तुलित करना, शरीर के विभिन्न भाग जैसे गले, थाई, पेट बाहो व कुल्हे की जमा चर्बी को हटाना आदि शरीर की विभिन्न प्रकार की समस्याओं से निजात पाने के लिए जी.बी.एच अमेरिकन हॉस्पीटल की उत्कृठ सेवाओं मे शामिल है।

डॉ. जी. नागराज (ओबेसिटी कॉस्मेटिक एव प्लास्टीक सर्जरी) विशेषज्ञ द्वारा **500** से अधिक सफलता पुर्वक प्रोसेस किये गये है।

कटे, होठ व तालु का नि: शुल्क ऑपरेशन।

अब तक 800 सफलतम ऑपरेशन

प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं।

समाज सेवा में सबसे आगें।

बिमा कार्डधारी, राज्य सरकार कर्मचारी, पेशनर्स एवं विभिन्न कम्पनी के मेडिक्लेम, ESI, ECHS, पुनः भुगतान सुविधा उपलब्ध हैं।

लकवा-पक्षाघात (स्ट्रोक/ब्रेन अटेक) रोग के चिकित्सको का अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन दिनांक 13-09-2014 सम्पन्न। लकवा रोगी को समय पर उपचार मिले।

उदयपुर। जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पीटल के मस्तिष्क रोग विभाग (डिपार्टमेन्ट ऑफ न्यूरोसाईन्स, एडवांस न्युरो केयर इन्स्टीट्यूट) द्वारा लकवा–पक्षाघात (स्ट्रोक/बेन अटेक) रोग पर एक दिवसीय सम्मेलन "6th Udaipur course on Stroke & Neuro Intervention-2014" शनिवार को होटल हिलटॉप–उदयपुर में आयोजित किया गया। सम्मेलन में देश–विदेश के ख्यातनाम चिकित्सकों ने प्रजेंटेशन के माध्यम से अपने विचार रखें।

जी.बी.एच. अमेरिकन हेल्थ कार्ड

जी.बी.एच. अमेरिकन हेल्थ कार्ड धारकों के लिए विशिष्ट सुविधाएं

☑ परामर्श पर 25% बचत ☑ भर्ती होने पर 10% बचत*
☑ जांचो पर 25% बचत ☑ वैधता 2 साल तक
☑ दवाईयों पर 7% बचत ☑ कार्ड की लागत मात्र 500 रू.

9 वें स्थापना दिवस पर कार्यक्रम "साज 2014"

जी.बी.एच अमेरिकन हॉस्पीटल स्थापना दिवस के उपलक्ष स्थापना दिवस पर रगांरंग कार्यक्रम "साज 2014" का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि जी.बी.एच अमेरिकन के एम. डी .डॉ. देव कोठारी ने 9 वें स्थापना दिवस पर डॉक्टर, नर्सिग, स्टाफ तकनिकी कर्मचारियों एवं अन्य कार्मिकों को समर्पित सेवाओं के लिए अग्रणी रहने के लिए उत्साह वर्धन किया। नव स्थापित जी.बी.एच. मेमोरियल कैंसर हॉस्पीटल ट्रासपोर्ट नगर बेडवास, उदयपुर जनता को समर्पित किया। अमेरिका में कार्यरत अमेरिकन हॉस्पीटल के सी.एम.डी किर्ती के. जैन का आभार व्यक्त किया। अपने वक्तव्य में बताया की अमेरिकन हॉस्पीटल राजस्थान में ही नही गुजरात, मध्यप्रदेश से भी अच्छी सुविधाए दे रहा है। डॉ कोठारी ने सन्देश दिया कि संकल्प से सब कुछ सम्भव हैं।

*(दवाईयों, चिकित्सकीय उपभोगी वस्तुओं एवं प्रत्यारोपण के अतिरिक्त सभी सेवाओं पर)। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करे : 0 96804-08050

जी.बी.एच अमेरिकन हॉस्पीटल में 105 युनिट रक्त दान।

नार्थ वेस्टर्न रेलवे एम्प्लाइज एवं लासन्स क्लब महाराना ने किया रक्त दान।

जी.बी.एच अमेरिकन हॉस्पीटल में नार्थ वेस्टर्न रेलवे एम्प्लाइज युनियन एवं लायन्स क्लब महाराणा के सयुक्त तत्वाधान में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इसमें रेलवे एम्प्लाईज एवं लायन्स क्लब महाराणा सदस्यों ने रक्त दान किया।

रन फार हार्ट

जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पीटल एवं हिन्दुस्तान जिंक (वेदांता) के सहयोग से विश्व हृदय दिवस के उपलक्ष में रविवार 28, सितम्बर, 2014 सुबह 7:00 से 8:00 बजे "रन फार हार्ट" का आयोजन राजीव गांधी पार्क पर किया गया। इसमें बच्चे, युवा, पुरूष, महिलाएं एवं सीनियर सिटीजन शैक्षणिक, गैर–शैक्षणिक संस्थाओं एवं आम जन की सहभागिता के साथ 5 कि.मी. दौड़ का आयोजन किया गया।

"रन फार हार्ट" डे पर राजीव गांधी पार्क रोड पर दौड़ लगाते उदयपुरवासी। व इनसेट में विजेता को पुरस्कृत करते हुए।

रन फॉर हार्ट का मकसद समाज में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाना है। जो एक थीम को आधार मानकर रन फॉर हार्ट का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष की थीम स्वस्थ हृदय और वातावरण को आधार मानकर आयोजन किया गया।

आधुनिक जीवनशैली एवं स्थानीय वातावरण भी कई रोगो का कारण है जीवनशैली रोगों में डायबीटीज एवं हृदय रोगियों की मृत्युदर को कम किया जा सकता है। आज भी सबसे अधिक सख्या में मृत्यु इलाज की जानकारी के अभाव में हो रही है। इसका प्रमुख कारण रोगो के प्रति समाज में जागरूकता नही होना। वर्तमान में नई तकनिकें एवं नए रिसर्च से ऐसे रोग पर काबु पाने की संभावना भी बढी हैं। इसी मकसद से पूरे विश्व में प्रतिवर्श 29 सितम्बर को हृदय दिवस मनाया जाता हैं।

मीडिया

दैनिक भास्कर

शुरुआती छह घंटे में उपचार से बचा जा सकता है लकवा से

वर्ल्ड स्ट्रोक डे आज : समय पर इलाज लेकर चंगे हुए लोग फैलाएंगे जागरुकता

बहरापन जांच शिविर में 35 रोगी लाभान्वित

जीबीएच मेमोरियल कैंसर हॉस्पिटल ने दिया सरकार को प्रस्ताव

बगैर खर्च मिल सकती है कैंसर रोगियों को सेवाएं

विश्व ऑस्टियोपोरोसिस दिवस आज

मौन महामारी की चपेट में महिलाएं

TIMES NATION

दैनिक नवज्योति

गठिया रोग, अस्थिरोग निदान पर वार्ता

मीडिया

उदयपुर . बुधवार 3 सितंबर, 2014

अफ्रीका जाकर आए तो डॉक्टरों की रहेगी नजर

ब्यूरो/नवज्योति, जयपुर

अफ्रीका में मौत का तांडव कर रहे 'इबोला' वायरस के देश में संक्रमण फैलाने की आशंकाओं के चलते अब अफ्रीकी देशों से राजस्थान आने वाले हर व्यक्ति पर डॉक्टरों की नजर रहेगी। डॉक्टर

सभी सीएमएचओ को एनसीडीसी के मार्फत अफ्रीका से आए लोगों की जानकारी देना शुरू कर दिया है, उन्हें गहनता से 21 दिन मोनिटरिंग के आदेश दिए हैं। लक्षण मिलने पर जिले के आइसोलेशन वार्ड में भर्ती कराने की हिदायत

इबोला के लिए क्या यात्रियों की मेडि[कल] स्क्रीनिंग हो रही है : बॉम्बे हाईकोर्ट

मुंबई | क्या हवाई अड्डों पर इबोला के संदिग्ध यात्रियों की मेडिकल स्क्रीनिंग (ज... रही है बॉम्बे हाईकोर्ट ने केंद्र और महाराष्ट्र सरकार से यह सवाल पूछा है। जस्टि... ओका की बेंच ने पूछा कि इबोला प्रभावित देशों से लौटने वालों की जांच के ... किया जा रहा है केंद्र और राज्यों की तरफ से पेश हुए वकीलों ने कोर्ट को ब... मेडिकल स्क्रीनिंग के मामले में उन्हें निर्देश नहीं मिले हैं। इस पर कोर्ट ने बु... जवाब देने को कहा है। इबोला को लेकर दायर एक जनहित याचिका पर ... दौरान कोर्ट ने यह आदेश दिया।

राजस्थान पत्रिका 19 उदयपुर . शनिवार . 23.08

कैंसर का अत्याधुनिक इलाज उदयपुर में संभव

जीबीएच मेमोरियल कैंसर हॉस्पिटल शुरू

उदयपुर राज्य में जयपुर के बाद निजी क्षेत्र का दूसरा कैंसर अस्पताल उदयपुर में खोला गया है। जीबीएच मेमोरियल कैंसर हॉस्पीटल नाम से बेड़वास में यह हॉस्पीटल खुला है। इलाज हो सकेगा। पेलिएटिव केयर वार्ड भी स्थापित किया गया है, जहां कैंसर रोगियों को दर्द से छुटकारा दिलाया जाता है। सीईओ डॉ. आनन्द झा ने बताया कि हॉस्पीटल में दक्षिण राजस्थान का पहला रेडिएशन थैरेपी केन्द्र स्थापित किया गया है। इसमें इमेज गाइडेड

'इबोला'

चमगादड़ से फैला। अन्य जानवरों को संक्रमित किया, इससे वहां के लोगों में आया और अब महामारी बना। अन्तराष्ट्रीय आपात बीमारी घोषित। मरीज की स्किन, खून, अन्य फ्ल्यूड्स के संपर्क में आने से फैलती है, बीमारी।

ये हो सकते है लक्षण

तेज बुखार, सिरदर्द, जोडो और मांसपेशियों में दर्द, गले में खराश, कमजोरी, पेट में दर्द, अपच, उल्टी। मरीज के बीमारी चरम स्थिति में पहुंचने पर शरीर के आंतरिक अंगों में खून का रिसाव होने लगता है। साथ ही आंखों, कानों, नाक, कफ, मल से खून आने लगते है। शरीर पर लाल चकते हो जाते है।

5 प्रकार की जातियाँ

- बुंदीबुग्यों इबोला वायरस
- जायरे इबोला वायरस
- सूडान इबोला वायरस
- ताई फॉरेस्ज इबोला वायरस
- रेस्टन इबोला वायरस

अब भारत में भी अलर्ट

अब दुनिया के कई देशों में भी यह बीमारी फैल चुकी है। भारत में भी कई संदिग्ध मिले है। अजमेर, मुंबई, दक्षिण भारत में भी संदिग्ध की रिपोर्ट है। अब डब्ल्यूएचओ ने वायरस के संक्रमण के चलते अन्तराष्ट्रीय आपातकालीन घोषित किया है। भारत सहित राजस्थान में भी चिकित्सा विभाग अलर्ट हो गया है। जयपुर में सांगानेर हवाई अड्डे पर अंतराष्ट्रीय हवाई से आने वाले यात्रियों की जांच के लिए स्क्रिनिंग जांच टीम तैनात है।

प्यारें पाठकों,

जी.बी.एच अमेंरिकन हॉस्पीटल के 9 वें स्थापना दिवस एवं नव स्थापित कैंसर हॉस्पीटल ट्रांसपोर्ट नगर बेडवास में स्थापित होने पर आपके स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवन की मंगलकामनाएं करता हुं। आपके बेहतर स्वाास्थ्य की दिशा में काम कर रहें, जी.बी.एच हॉस्पीटल के प्रयासों को आप तक पहुंचाने के लिए प्रकाशित की जाने वाली यह पत्रिका जी.बी.एच. आरोग्यम् का मासिक अंक प्रकाशित कर रहें है। इस मौके पर संपादक मंडल देता हैं आपको सीधे हमसे जुड़ने का मौका।

स्वाास्थ के संबंध में किसी भी प्रकार की शंका, समस्या या कोई जानकारी यदि आप लेना चाहते हैं तो हमें लिखें या ई–मेल करें। हमारे अनुभवी योग्य डॉक्टर्स करेगें आपकी हर शंका का समाधान। देर ना करें।

रोगियों की जानकारी भेजें।

रोगी का नाम .... परिजन का नाम ....

मोबाईल नम्बर .... ई–मेल पता ....

किस प्रकार का रोग हैं ....

क्या जानकारी चाहते है। ....

ई–मेल करें – gbhamericanpro@gmail.com या हमें लिखें इस पते पर :–
संपादक, जी.बी.एच., आरोग्यम, 101 कोठी बाग, भट्ट जी की बाड़ी, उदयपुर राजस्थान।